गद्य खंड: 'दो बैलों की कथा' (लेखक: प्रेमचंद)

लेखक एवं पृष्ठभूमि परिचय:

मुंशी प्रेमचंद का जन्म सन् 1880 में लमही (वाराणसी), उत्तर प्रदेश में हुआ था और उनका मूल नाम धनपत राय था। उन्होंने असहयोग आंदोलन में सक्रिय भाग लेने के लिए अपनी सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया था। उनकी कहानियाँ 'मानसरोवर' के आठ भागों में संकलित हैं। 'गोदान', 'सेवा सदन', 'गबन' आदि उनके प्रमुख उपन्यास हैं। सन् 1936 में उनका निधन हो गया। 'दो बैलों की कथा' में उन्होंने किसानों के जीवन और पशुओं के साथ उनके भावनात्मक संबंधों को मार्मिक ढंग से दिखाया है और परोक्ष रूप से यह कहानी स्वतंत्रता आंदोलन की भावना से जुड़ी है।

अनुच्छेद 1: गधे और बैल की तुलना तथा हीरा-मोती का परिचय

कठिन शब्दार्थ:

- **निरापद** — आपत्ति से रहित, सुरक्षित
- **सहिष्णुता** — सहनशीलता, क्षमा
- **विषाद** — उदासी, अवसाद
- **पराकाष्ठा** — अंतिम सीमा, चरम सीमा
- **गोईं** — जोड़ी (पशुओं की जोड़ी)
- **चौकस** — चौकन्ना, सावधान

सरल व्याख्या:

लेखक कहते हैं कि जानवरों में गधे को सबसे बुद्धिहीन समझा जाता है और जब हम किसी को बेवकूफ कहना चाहते हैं, तो उसे गधा कहते हैं। लेकिन गधे को यह पदवी उसके सीधेपन और निरापद सहिष्णुता के कारण मिली है। गधे को कभी क्रोध करते नहीं देखा जाता; चाहे उसे सड़ी घास खाने को दी जाए या उसे मारा जाए, उसके चेहरे पर हमेशा एक स्थायी विषाद (उदासी) छाया रहता है। सुख-दुख, लाभ-हानि हर परिस्थिति में वह एक समान रहता है, जिसके कारण उसमें ऋषियों-मुनियों जैसे उच्च गुण पराकाष्ठा को पहुँच गए हैं, फिर भी आदमी उसे बेवकूफ कहता है। इसी सीधेपन के कारण अफ्रीका और अमेरिका में भारतीयों की दुर्दशा हो रही है क्योंकि वे ईंट का जवाब पत्थर से देना नहीं जानते।

बैल को गधे का छोटा भाई माना गया है क्योंकि वह गधे से थोड़ा कम सीधा है और कभी-कभी अड़ियल रुख अपनाकर व मार कर अपना असंतोष प्रकट कर देता है, इसलिए उसका स्थान गधे से नीचा है। झूरी काछी के पास हीरा और मोती नाम के दो पछाईं जाति के सुंदर, देखने में चौकस और डील-डौल में ऊँचे बैल थे। दोनों में गहरा भाईचारा था और वे बिना बोले एक-दूसरे की मूक-भाषा में विचार-विनिमय कर लेते थे। वे एक-दूसरे को चाटकर और

विनोद के भाव से सींग मिलाकर अपना प्रेम प्रकट करते थे। जब वे हल में जोते जाते, तो दोनों की यही चेष्टा होती थी कि ज्यादा-से-ज्यादा बोझ मेरी ही गरदन पर रहे। शाम को दोनों साथ ही नाँद में खली-भूसा खाते थे।

एक बार झूरी ने इस जोड़ी (गोईं) को अपनी ससुराल भेज दिया। बैलों ने समझा कि मालिक ने हमें बेच दिया है, जिससे उनका दिल भारी हो गया। झूरी के साले गया को उन्हें अपने घर ले जाने में दाँतों पसीना आ गया। नए स्थान पर बैलों का मन नहीं लगा, सब बेगाने से लगे। रात को जब गाँव में सब सो गए, तो दोनों ने ज़ोर मारकर पगहे (रस्सियाँ) तोड़ डालीं और सुबह तक वापस झूरी के घर चरनी पर आ खड़े हुए। झूरी उन्हें देखकर स्नेह से गद्गद हो गया, लेकिन झूरी की पत्नी उनसे चिढ़ गई और उसने मज़दूर को ताकीद करके उन्हें खाने के लिए केवल सूखा भूसा दिलवाया।

अनुच्छेद 2: गया के घर दोबारा जाना और बालिका का स्नेह

कठिन शब्दार्थ:

- **ताकीद** — किसी कार्य के लिए बार-बार चेताना या ज़ोर देना
- **टिटकार** — 'टिक-टिक' शब्द करके पशुओं को चलने के लिए प्रेरित करना
- **थान** — पशुओं के बाँधे जाने की निश्चित जगह
- **व्यथा** — आहत सम्मान की पीड़ा, दुःख

सरल व्याख्या:

दूसरे दिन झूरी का साला गया फिर आया और इस बार उसने दोनों बैलों को गाड़ी में जोतकर मोटी रस्सियों से बाँधा और कल की शरारत का मज़ा चखाया। गया ने उनसे हल में कठोर काम लिया, पर इन दोनों ने पाँव न उठाने की कसम खा रखी थी। जब गया ने हीरा की नाक पर खूब डंडे जमाए, तो मोती का गुस्सा बेकाबू हो गया और वह हल, रस्सी, जुआ सब तोड़कर भाग खड़ा हुआ। हीरा ने मूक-भाषा में समझाया कि भागना व्यर्थ है और बैल का जन्म लिया है तो मार से कहाँ तक बचेंगे। गया आ पहुँचा और दोनों को पकड़कर ले गया तथा फिर वही सूखा भूसा खाने को दिया।

उसी घर में भैरो की एक छोटी लड़की रहती थी, जिसकी सौतेली माँ उसे बहुत मारती थी। वह लड़की बैलों के दुःख को देखकर उनसे एक प्रकार की आत्मीयता (अपनापन) महसूस करने लगी। वह रोज़ रात को चुपके से उन्हें दो रोटियाँ खिला जाती थी। प्रेम के इस प्रसाद की बरकत से वे सूखा भूसा खाकर भी दुर्बल न होते थे, पर उनके रोम-रोम में विद्रोह भरा हुआ था। एक दिन मोती ने रस्सी तुड़ाकर भागने की योजना बनाई। रात को जब बालिका रोटियाँ खिलाकर चली गई, तो दोनों मोटी रस्सियाँ चबाने लगे।

सहसा लड़की बाहर निकली और उसने बैलों पर होने वाले नए अत्याचार (नाक में नाथ डालना) से बचाने के लिए उनके गँाव (गले की रस्सी) खोल दिए और शोर मचा दिया कि फूफावाले बैल भागे जा रहे हैं। गया हड़बड़ाकर निकला और पीछा किया, लेकिन दोनों मित्र सीधे दौड़ते चले गए और मार्ग का ज्ञान भूल गए।

अनुच्छेद 3: साँड़ से मुकाबला और मटर के खेत में बंदी

कठिन शब्दार्थ:

- **बेतहाशा** — बहुत तेज़ी से, बिना सोचे-विचारे भागना
- **तजुरबा** — अनुभव
- **रगेदना** — खदेड़ना, पीछे दौड़ना
- **मल्लयुद्ध** — कुश्ती, बाहुयुद्ध

सरल व्याख्या:

रास्ता भूलने के बाद दोनों एक खेत के किनारे खड़े होकर सोचने लगे। वे भूख से व्याकुल थे, इसलिए मटर के खेत में घुसकर चरने लगे। पेट भरने के बाद जब वे आज़ादी का अनुभव करके उछल-कूद रहे थे, तभी सामने से एक विशाल साँड़ डौंकता हुआ आता दिखाई दिया। साँड़ पूरा हाथी जैसा था और उससे अकेले भिड़ना जान से हाथ धोना था। दोनों मित्रों ने संगठित होकर एक साथ चोट करने का निश्चय किया।

तय योजना के अनुसार, ज्योंही साँड़ ने हीरा पर हमला किया, मोती ने पीछे से उसके पेट में सींग भोंक दी। साँड़ क्रोध में आकर पीछे फिरा तो हीरा ने दूसरे पहलू में सींग चुभा दिया। इस संगठित दोहरी मार से जख्मी होकर साँड़ बेदम होकर गिर पड़ा और दोनों मित्रों ने उसे जीवित छोड़ दिया।

जीत के नशे में मोती फिर से मटर के खेत में घुसकर चरने लगा, यद्यपि हीरा उसे मना करता रहा। अभी उसने दो-चार ग्रास ही खाए थे कि खेत के रखवालों ने उन्हें घेर लिया। हीरा तो मेड़ पर था और आसानी से निकल गया, लेकिन मोती सींचे हुए खेत की कीचड़ में खुर धँसने के कारण भाग न सका और पकड़ा गया। अपने संगी को संकट में देखकर हीरा भी वापस लौट आया कि फँसेंगे तो दोनों फँसेंगे। रखवालों ने दोनों को पकड़ लिया और प्रातःकाल उन्हें काँजीहौस में बंद कर दिया गया।

अनुच्छेद 4: काँजीहौस की कैद और दीवार तोड़ना

कठिन शब्दार्थ:

- **काँजीहौस** — वह बाड़ा जिसमें लावारिस पशु बंद किए जाते हैं
- **साबिका** — वास्ता, सरोकार पड़ना
- **उजड्डपन** — अशिष्टता, उदंडता
- **चेत** — होश, संज्ञा

सरल व्याख्या:

काँजीहौस में दोनों मित्रों को जीवन में पहली बार ऐसा साबिका पड़ा कि पूरे दिन उन्हें खाने को एक तिनका भी नहीं मिला। वहाँ पहले से ही कई भैंसें, बकरियाँ, घोड़े और गधे जमीन पर मुरदों की तरह भूखे-प्यासी पड़े थे, कई तो खड़े भी नहीं हो सकते थे। रात को भूख से व्याकुल होकर हीरा के दिल में विद्रोह की ज्वाला दहक उठी। उसने अपने नुकीले सींग बाड़े की कच्ची दीवार में गड़ाकर मिट्टी गिराना शुरू कर दिया। यह उजड्डपन देखकर चौकीदार ने लालटेन लेकर हाजिरी लेते समय हीरा को कई डंडे मारे और उसे मोटी रस्सी से कसकर बाँध दिया।

हीरा के बँध जाने के बाद मोती ने उसकी हिम्मत बढ़ाई और स्वयं उसी जगह दीवार पर सींग मारना शुरू किया। कोई दो घंटे की ज़ोर-आजमाई के बाद ऊपर से दीवार एक हाथ गिर गई और दूसरे धक्के में आधी दीवार गिर पड़ी। दीवार गिरते ही अधमरे जानवर सचेत हो गए और तीनों घोड़ियाँ, बकरियाँ तथा भैंसें भाग निकलीं। लेकिन दोनों गधे डर के मारे वहीं खड़े सोच रहे थे कि भागें या न भागें। मोती ने उन्हें सींगों से मार-मारकर बाड़े के बाहर निकाला। मोती चाहता तो स्वयं भाग सकता था, लेकिन उसने अपने मित्र हीरा को अकेले बंधन में छोड़कर भागना स्वीकार नहीं किया और उसके पास ही आकर सो रहा। सुबह होने पर चौकीदार व कर्मचारियों ने मोती की खूब मरम्मत की और उसे भी मोटी रस्सी से बाँध दिया।

अनुच्छेद 5: बधिक के हाथों नीलामी और थान पर वापसी

कठिन शब्दार्थ:

- **बधिक** — कसाई, वध करने वाला
- **नीलाम** — बोली बोलकर सबसे ऊँचे दाम वाले को बेचना
- **अख्तियार** — अधिकार, वश
- **उन्मत्त** — मदहोश, मतवाला
- **उछाह** — उत्सव, उत्साह

सरल व्याख्या:

एक सप्ताह तक दोनों मित्र वहाँ भूखे-प्यासे बँधे पड़े रहे, जिससे वे अत्यधिक दुर्बल हो गए और उनकी ठठरियाँ निकल आईं। एक दिन बाड़े के सामने डुग्गी बजी और उन्हें एक कठोर मुद्रा वाले दढ़ियल कसाई के हाथों नीलाम कर दिया गया। वह बधिक उन्हें डंडे जमाते हुए अपने साथ ले जाने लगा। रास्ते में अन्य सुखी और चिकने पशुओं को चरते देखकर दोनों मित्र सोचने लगे कि ये सब कितने स्वार्थी हैं जो उनके दुःख की चिंता नहीं करते।

अचानक दोनों को महसूस हुआ कि यह वही परिचित रास्ता है जिससे गया उन्हें ले गया था। वही खेत, बाग और कुआँ वापस मिलने लगे। अपनी पहचानी हुई जगह देखकर उनकी सारी थकान और दुर्बलता गायब हो गई और वे बछड़ों की भाँति कुलेलें करते हुए उन्मत्त होकर अपने घर (झूरी के थान) की ओर तेज़ी से दौड़े। झूरी द्वार पर बैठा धूप खा रहा था, बैलों को देखते ही उसने उन्हें गले लगा लिया।

पीछे से दढ़ियल कसाई भी आ पहुँचा और बैलों की रस्सियाँ पकड़ लीं। झूरी ने दृढ़ता से कहा कि ये मेरे बैल हैं क्योंकि ये मेरे द्वार पर खड़े हैं, तुम्हें इन्हें नीलाम करने का कोई अख़्तियार नहीं है। जब कसाई जबरदस्ती करने लगा, तो मोती ने सींग चलाया और कसाई को गाँव के बाहर तक खदेड़ दिया। कसाई धमकियाँ देता हुआ हारकर चला गया और गाँव के लोग यह तमाशा देखकर हँसने लगे। इसके बाद नाँदों में मज़ेदार खली, भूसा, चोकर और दाना भर दिया गया और दोनों मित्र खाने लगे। पूरे गाँव में उछाह (उत्सव) जैसा माहौल हो गया और मालकिन ने भी आकर दोनों के माथे चूम लिए।